❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा न इन्द्र परा वृणक्।

सामवेद 260

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! हमारा त्याग मत करो।

O Bounteous Lord! Kindly do not forsake us.

वर्ष 39, अंक 44 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 5 सितम्बर, 2016 से रविवार 11 सितम्बर, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

भारत के सन्तों को जनता की आत्मा ने दिया सन्त का दर्जा – आखिर चर्च ने क्यों बनाया मदर टेरेसा को सन्त

भारत में धर्मान्तरण के बड़े षड़यन्त्र हेतु

मदर टेरेसा! यह नाम सुनते ही किसी के भी मस्तिष्क में एक नीले बॉर्डर वाली, सर तक ढकी हुई, सफेद साड़ी पहनी हुई, वृद्ध महिला का झुरियों भरा चेहरा उभरता है, जिसने मानवता की सच्ची सेवा के लिए अपना मूल देश त्याग दिया। जो गरीबों की हमदर्द बनकर उभरी और जिसने हजारों अनाथों, दीनों और निराश्रयों को सहारा दिया। जिसे उसकी सेवा के लिए विश्व शांति का नोबल पुरस्कार मिला था। मदर टेरेसा के विषय मे आपको यह सब मालूम है क्यूंकि आपको यही बताया गया हैं। परन्तु इस सिक्के के दूसरे पहलु से आप अभी अनभिज्ञ है। उसी से अवगत करवाना इस लेख का मुख्य उद्देश्य है।

सत्य अगर कड़वा भी हो तो भी वह सत्य ही कहलाता है। भारत में कार्य करने वाली ईसाई संस्थाओं का एक चेहरा अगर सेवा है तो दूसरा असली चेहरा प्रलोभन, लोभ, लालच, भय और दबाव से धर्मान्तरण भी करना हैं। इससे तो यही प्रतीत होता है की जो भी सेवा कार्य मिशनरी द्वारा किया जा रहा है उसका मूल उद्देश्य ईसा मसीह के लिए भेड़ों की संख्या बढ़ाना है। संत वही होता है जो पक्षपात रहित एवं जिसका उद्देश्य मानवता की भलाई है। ईसाई मिशनरीयों का पक्षपात इसी से समझ में आता है की वह केवल उन्हीं गरीबों की सेवा करना चाहती है, जो ईसाई मत को ग्रहण कर ले।

मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त 1910 को स्कोप्जे (मेसेडोनिया) में हुआ था और बारह वर्ष की आयु में उन्हें अहसास हुआ कि "उन्हें ईश्वर बुला रहा है"। 24 मई 1931 को वे कलकत्ता आई और यही की होकर रह गई। कोलकाता आने पर धन की उगाही करने के लिए मदर टेरेसा ने अपनी मार्केटिंग आरम्भ की। उन्होंने कोलकाता को गरीबों का शहर के रूप में चर्चित कर और खुद को उनकी सेवा करने वाली के रूप में चर्चित कर अंतराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की। वे कुछ ही वर्षों में 'दया की मूर्ति', 'मानवता की सेविका', 'बेसहारा और गरीबों की मसीहा', 'लार्जर दैन लाईफ' वाली छवि से प्रसिद्ध हो गई। हालाँकि उन पर हमेशा वेटिकन की मदद और मिशनरीज ऑफ चैरिटी की मदद से "धर्म परिवर्तन" का आरोप तो लगता रहा। गौरतलब तथ्य यह है कि इनमें से अधिकतर आरोप पश्चिम की प्रेस या ईसाई पत्रकारों आदि ने ही किये थे, ना कि किसी हिन्दू संगठन ने, जिससे संदेह और भी गहरा हो जाता है। अपने देश के गरीब ईसाईयों की सेवा करने के स्थान पर मदर टेरेसा को भारत के गरीब गैर ईसाईयों के उत्थान में अधिक रूचि होना क्या ईशारा करता है? पाठक स्वयं निर्णय कर सकते है।

मदर टेरेसा को समूचे विश्व से, कई ज्ञात और अज्ञात स्रोतों से बड़ी-बड़ी धन

– शेष पृष्ठ 5 पर

.....1947 में देश आजाद होते समय महाराष्ट्र के अनेक मिशन के चर्चों को आर्यसमाज ने खरीद लिया क्योंकि उनका संचालन करने वाले ईसाई इंग्लैंड लौट गए थे। कुछ दशकों के पश्चात ईसाइयों ने उस संपत्ति को दोबारा से आर्यसमाज से खरीदने का दबाव बनाया। आर्यसमाज के अधिकारीयों द्वारा मना करने पर मदर टेरेसा द्वारा आर्यसमाज के पदाधिकारियों को देख लेने की धमकी दी गई थी। कमाल की संत?.......

On December 2, 1978, O P Tyagi presented an anti-conversion bill in the Lok Sabha during the Janata regime. The bill stipulated that no person shall convert or attempt to convert, either directly or otherwise, any person from one religious faith to another by the use of force, inducement, deceit or any fraudulent means nor shall any person abet any such conversion. Those contravening the provisions in Section 3 would be punishable without prejudice to any civil liability, with imprisonment or fine.

And who was in the forefront of opposing this bill? Mother Teresa, supported by Christians in an all-India agitation, even writing to then PM Morarji Desai on March 25, 1979. Desai refuted her allegations to state, "If charity and philanthropy is not connected with an ulterior motive, they are beneficial. But charity and conversions cannot go together. Religion prospers only when charity and philonthropy are undertaken without any motive. The Bill you have mentioned does not affect adversely the propagation of religion. In fact, the Bill is an attempt to see that the poor and illiterate may enjoy religious freedom without fear."

....धर्म स्वातंत्रय विधेयक के रूप में धर्मान्तरण के विरुद्ध बिल पेश हुआ तो इन्ही मदर टेरेसा ने प्रधानमंत्री को पत्र लिख कर इस विधेयक का विरोध किया और कहाँ था की ईसाई समाज सभी समाज सेवा की गतिविधियां जैसे की शिक्षा, रोजगार, अनाथालय आदि को बंद कर देगा। अगर उन्हें अपने ईसाई मत का प्रचार करने से रोका जायेगा। तब प्रधान मंत्री देसाई ने कहा था 'इसका अर्थ क्या यह समझा जाये की ईसाईयों द्वारा की जा रही समाज सेवा एक दिखावा मात्र है। उनका असली प्रयोजन तो धर्मान्तरण हैं।'..... देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री का उत्तर ईसाई समाज की सेवा के आड़ में किये जा रहे धर्मान्तरण को उजागर करता है।

चर्च के सन्त की सच्चाई !

– डॉ. वेद प्रताप वैदिक

कैथोलिक संप्रदाय के विश्व-गुरु पोप फ्रांसिस आज मदर टेरेसा को संत की उपाधि प्रदान करेंगे। मदर टेरेसा भारतीय नागरिक थीं। इसलिए उन्हें कोई संत कहे और विश्व-स्तर पर कहे तो क्या हमें अच्छा नहीं लगेगा? वैसे भी उन्हें भारत-रत्न और नोबेल पुरस्कार भी मिल चुका है। उनके योगदान पर कई पुस्तकें भी आ चुकी हैं और छोटी-मोटी फिल्में भी बन चुकी हैं।ह्लेकिन मेरे मन में आज यह जिज्ञासा पैदा हुई कि मालूम करुं कि कैथोलिक संप्रदाय में संत किसे घोषित किया जाता है? संत किसे माना जाता है? दो शर्तें हैं। एक शर्त तो यह है कि जो ईसा मसीह के लिए अपना जीवन समर्पित करे और दूसरी यह कि जो जीते-जी या मरने के बाद भी कम से कम दो चमत्कार करे। टेरेसा ने ये दोनों शर्तें पूरी की हैं। इसीलिए पूरी खात्री करने के बाद रोमन केथोलिक चर्च आज उन्हें 'संत' की सर्वोच्च उपाधि से विभूषित कर रहा है।ह्व

जहां तक 'चमत्कारों' की बात है, यह शुद्ध पाखंड है। विज्ञान, विवेक और तर्क की तुला पर उन्हें तोला जाए तो ये चमत्कार शुद्ध अंधविश्वास सिद्ध होंगे। टेरेसा का पहला चमत्कार वह था, जिसमें उन्होंने एक बंगाली औरत के पेट की रसौली को अपने स्पर्श से गला दिया। उनका दूसरा चमत्कार माना जाता है, एक ब्राजीलियन आदमी के मस्तिष्क की कई गांठों को उन्होंने गला दिया। यह चमत्कार उन्होंने अपने स्वर्गवास के 11 साल बाद 2008 में कर दिखाया। ऐसे हास्यास्पद चमत्कारों को संत-पद के लिए जरुरी कैसे माना जाता है? ऐसे चमत्कार सिर्फ ईसाइयत में ही नहीं हैं, हमारे भारत के हिंदू पाखंडी, स्याने-भोपे और बाजीगर भी दिखाते रहते हैं और अपनी दुकानें चलाते रहते हैं।ह्व

जहां तक मदर टेरेसा की मानव- सेवा की बात है, उसकी भी पोल उन्हीं के साथी अरुप चटर्जी ने अपनी किताब में खोलकर रखी है। उसने बताया है कि मदर टेरेसा का सारा खेल मानव- करुणा पर आधारित था। वे अपने आश्रमों में मरीजों, अपंगों, नवजात फेंके हुए बच्चों, मौत से जूझते लोगों को इसलिए नहीं लाती थीं कि उनका इलाज हो सके बल्कि इसलिए लाती थीं कि उनकी भयंकर दुर्दशा दिखाकर लोगों को करुणा जागृत की जा सके। उनके पास समुचित इलाज की कोई व्यवस्था नहीं थी और मरने वालों के सिर पर पट्टी रखकर उन्हें वे छल-कपट से बपतिस्मा दे देती थीं याने ईसाई बना लेती थीं। मरते हुए आदमी से वे पूछ लेती थीं कि 'क्या तुमको स्वर्ग जाना है?' इस प्रश्न के जवाब में 'ना' कौन कहेगा? 'हां' का मतलब हुआ बपतिस्मा। किसी को दवा देकर या पढ़ाकर या पेट भरकर बदले में उसका धर्म छीनने से अधिक अनैतिक कार्य क्या हो सकता है? कोई स्वेच्छा और विवेक से किसी भी धर्म में जाए तो कोई बुराई नहीं है लेकिन इस तरह का काम क्या कोई संत कभी कर सकता है? 1994 में लंदन में क्रिस्टोफर हिचंस और तारिक अली ने एक फिल्म बनाई, जिसमें मदर टेरेसा के आश्रमों का आंखों देखा हाल दिखाया गया था। हिचंस ने फिर एक किताब भी लिखी। उसमें बताया कि कैसे हैती के बदनाम और लुटेरे तानाशाह ज्यां क्लाड दुवालिए से टेरेसा ने सम्मान और धनराशि भी हासिल की। लंदन के राबर्ट मेक्सवेल और चार्ल्स कीटिंग-जैसे अपराधियों से उन्होंने करोड़ों रुपये लिये। उन्होंने आपातकाल का समर्थन किया और भोपाल गैस-कांड पर लीपा- पोती की। ध्‍ान्य है, मदर टेरेसा, जिनके संत बनने पर हमारे भोले प्रचार प्रेमी नेता वेटिकन पहुंच गए हैं।

– साभार :
व्हाट्स एप्प पर जारी सन्देश

वेद-स्वाध्याय

किस पाप से तेरे दर्शन नहीं होते

पृच्छे तदेनो वरुण दिद्क्षुः उपो एमि चिकितुषो वि पृच्छम्।
समानमिन्मे कवयश्चिदाहुः अयं ह तुभ्यं वरुणो हृणीते।। – ऋ. 7/86/3
ऋषिः **वसिष्ठः।।** देवता-**वरुणः।।** छन्दः **निचृत्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ – **वरुण**=हे पापनिवारक देव! **तत् एनः पृच्छे** = मैं उस पाप को तुझसे पूछता हूँ (जिसके कारण मुझे तुम्हारा दर्शन नहीं हो पाता) **दिदृक्षुः** = मैं तुम्हारा दर्शनाभिलाषी हूँ **वि पृच्छम्** = इस विषय में विविध प्रश्न पूछने के लिए मैं **चिकितुषः** = विद्वानों के **उपो एमि** = पास जाता हूँ, परन्तु **कवयः चित्** = वे सब ज्ञानी पुरुष भी **समानं इत् में आहुः** = मुझे एक ही उत्तर देते हैं- एक ही बात कहते हैं- कि ''**अयं वरुणः ह** = निश्चय से यह वरुणदेव ही **तुभ्यं हृणीते** = तुझसे अप्रसन्न है; उसे प्रसन्न कर!''

विनय-हे प्रभो! मैं तेरे दर्शन पाने के लिए व्याकुल हूँ। तुझसे साक्षात् मिलने के लिए दिन-रात प्रतीक्षा में हूँ। इसके लिए यत्न करते हुए बहुत दिन हो गये। ऐसा एक भी साधन नहीं छोड़ा जो तुझसे मिलानेवाला प्रसिद्ध हो। कठोर-से-कठोर तप बड़े आनन्द से किये हैं। तो अब कौन-सा पाप रह गया है जिससे तुम्हारे चरणदर्शन नहीं हो पाते? हे वरुण! तुमसे ही पूछता हूँ, मुझे मालूम नहीं। मुझे मालूम होता तो मैं कब का प्रतीकार कर चुका होता। हे पाप-निवारक! तुम ही मुझ दर्शन-पिपासु को वह मेरा अपराध बतलाओ जिससे अप्रसन्न होकर तुम मुझे दर्शन नहीं देते। जिन्हें मैं मनुष्यों में ज्ञानी, भक्त, विद्वान्, महात्मा देखता हूँ उन सबके पास जाता हूँ और जाकर यही पूछता हूँ कि मुझे वरुणदेव के दर्शन क्यों नहीं होते? परन्तु वे सब क्रान्तदर्शी महात्मागण भी मुझे एकस्वर से यही बतलाते हैं कि वह वरुणदेव ही तुझसे नाराज है। वे सब सच्चे ज्ञानी मुझे यही एक उत्तर देते हैं। तो, हे देव! या तो मेरा पाप मुझे दिखला दो, अपनी अप्रसन्नता का कारण बतला दो, नहीं तो मुझे दर्शन दे दो। हे मेरे स्वामिन्! जब मुझे अपने पाप का पता ही न लगेगा तो मैं उसका प्रतीकार कैसे कर सकूँगा? मैं तुम्हें प्रसन्न करके छोड़ूँगा। अपने पापों के प्रतिविघात के लिए मैं घोर-से-घोर प्रायश्चित्त करने को तैयार हूँ। अपने को पूरी तरह पवित्र कर डालने के लिए आज मैं क्या नहीं कर डालूँगा! मैं अब तुझसे मिल जाने के लिए व्याकुल हो उठा हूँ। इसलिए, हे अन्तर्यामी प्रभो! मैं तुझसे अपने पापों को जानना चाहता हूँ। मेरे पापों के सिवाय इस संसार में और कोई वस्तु नहीं है जो अब मुझे तुमसे मिलने से रोक सके।

– साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय – क्या हुआ जो अब देश शर्मसार नहीं हुआ?

दिल्ली अपराध शाखा ने देह व्यापार के जरिए रोजाना दस लाख रुपए कमाने वाले एक बड़े अंतरराष्ट्रीय गिरोह का पर्दाफाश किया है। मुरादाबाद का अफाक और हैदराबाद की सायरा, इन दोनों के छह कोठों में 40 कमरों में ढाई सौ लड़कियों को बंधक बनाकर इस गोरखधंधे को अंजाम देने वाले पति-पत्नी सहित आठ लोगों को गिरफ्तार कर पुलिस ने इनके खिलाफ मकोका एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है। जैसे-जैसे मामला खुल रहा है वैसे-वैसे इसमें नेताओं की उपस्थिति भी प्रकट हो रही है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश की सात लड़कियों का नेपाल से बरामद होना इस बात का संकेत करता है कि देह व्यापार के नाम पर इन मानव तस्करों की जड़े किस कदर देश के अन्दर फैली है। वैसे देखा जाये तो कई बार हमारा देश राह चलती एक लड़की की छेडछाड़ पर भी शर्मसार हो जाता है और कई बार इस तरह की बड़ी से बड़ी घटना पर भी शर्मसार नहीं होता। मतलब हम ज्यादातर सिर्फ उन्ही खबरों पर शर्मसार होते हैं जिन पर न्यूज एंकर होते दिखाई देते हैं। रोहित वेमुला की आत्महत्या पर देश शर्मसार हुआ, अखलाक की हत्या पर हुआ, इतना तक हुआ कि अवार्ड, पदक तक सरकार के ऊपर फेंक दिए। कलमकार, कथाकार, कलाकार इस घटना पर हर कोई शर्मसार हुआ था। यदि हम कभी शर्मसार नहीं हुए और ना होते इस मानव तस्करी कर कोठे पर बैठा दी जाने वाली नाबालिग बच्चियों को लेकर। आज हमारा समाज वेश्याओं को सोसायटी का सबसे तुच्छ हिस्सा मानता है लेकिन क्या ये बात सच नहीं कि इस भाग की रूपरेखा का निर्माण करने वाला भी स्वयं हमारा समाज ही है। हम अक्सर महिलाओं और पुरुषों से भरे कमरे में नारीवादी आंदोलन की बातें करते हैं, उसके विकास की, उसकी स्वतंत्रता के मूल्यों की। यदि कभी बात नहीं होती तो बस इस व्यभिचार की। या फिर इसे गन्दा विषय समझकर दूर खड़े हो जाते जबकि पुरुषवादी समाज बहुत अच्छे से समझता है। इसी समाज ने उन्हें घर की चारदीवारी से निकालकर सड़क पर खड़ा कर दिया है।

पिछले दिनों राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के एक अध्ययन के मुताबिक भारत में 68 प्रतिशत लड़कियों को रोजगार के झांसे में फंसाकर वेश्यालयों तक पहुंचाया जाता है। 17 प्रतिशत शादी के वायदे में फंसकर आती हैं। वेश्यावृत्ति में लगी लड़कियों और महिलाओं की तादाद लगभग 30 लाख है। सयुक्त राष्ट्र की परिभाषा के अनुसार 'किसी व्यक्ति को डराकर, बलप्रयोग कर या दोषपूर्ण तरीके से भर्ती, परिवहन या शरण में रखने की गतिविधि तस्करी की श्रेणी में आती है'। दुनिया भर में 80 प्रतिशत से ज्यादा मानव तस्करी यौन शोषण के लिए की जाती है, और बाकी बंधुआ मजदूरी के लिए। भारत में दिल्ली मानव तस्करी का गढ़ बनता जा रहा है।

सवाल है कि जब सारा समाज सभ्य है तो यह स्थिति क्यों बनती है? कहीं ऐसा तो नहीं कि इस स्थिति पर भी मांग और आपूर्ति का सिद्धांत लागू होता है? पुरुष काम करने के लिए बड़े व्यवसायिक शहरों की ओर पलायन करते हैं, जिससे व्यापारिक सेक्स की मांग पैदा होती है। इस मांग को पूरा करने के लिए सप्लायर हर तरह की कोशिश करता है जिसमें अपहरण भी शामिल है। गरीब परिवार की छोटी लड़कियों और युवा महिलाओं पर यह खतरा ज्यादा होता है। यदि आप किसी गरीब परिवार में पैदा हों या लड़की हों तो खतरा और बढ़ जाता है। कभी कभी पैसों की खातिर मां बाप भी बेटियों को बेचने पर आमादा हो जाते हैं। सामाजिक असमानता, क्षेत्रीय लिंग वरीयता, असंतुलन और भ्रष्टाचार मानव तस्करी के प्रमुख कारण हैं। हमे आजाद हुए एक अरसा बीत गया किन्तु जब इस तरह कि घटना होती है तो हम कहीं ना कहीं खुद को लचर कानून व्यवस्था वाले देश के लाचार से नागरिक महसूस करते है। सड़कों, मेट्रो, बस आदि में सब लोग होर्डिंग देखते होंगे जिनमें दो चुटिया कर एक बच्ची हाथ में स्लेट लिए बैठी रहती है जिसके नीचे लिखा होता है बेटी बचाओ-बेटी पढाओ, बेटी है तो कल है, भ्रूण हत्या पाप है आदि-आदि बहुतेरे स्लोगन दिखाई पड़ते है। पर क्या कभी सरकारें वो पोस्टर भी लगाती है जिनमें कोठों की खिड़कियों से क्रीम, पाउडर से रंगी पुती मासूम बेटी मजबूरी में ग्राहकों को आकर्षित करती दिखाई देती है? शायद नहीं कारण वह बेबस है, अपनी गरीबी में देह बेचने के लिए। कहा जाता है बेटी है तो कल है पर उस बेटी का कल क्या है? यही कि यदि वो कोख से बच गयी तो तस्कर उसे जिस्म बेचने के लिए किसी कोठे पर बैठा देंगे। यदि हाँ तो फिर यह हमारे सभ्य संस्कारी समाज पर काला धब्बा है। इससे तो अच्छा उसका कोख में ही मर जाना सही है वरना हर रोज हर पल मारना पड़ेगा।

अनैतिक तस्करी निवारण अधिनियम के तहत व्यवसायिक यौन शोषण दंडनीय है। इसकी सजा सात साल से लेकर आजीवन कारावास तक की है। दिसंबर 2012 में हुए जघन्य बलात्कार मामले में सरकार ने एक विधेयक पारित किया जिससे यौन शोषण-हिंसा और सेक्स के अवैध कारोबार से जुड़े कानूनों में बदलाव हो सके। लेकिन इन कानूनों के बनने और लागू होने में बड़ा अंतर है। हर तरफ फैले भ्रष्टाचार और रिश्वत के कारण इन एजेंटों का लड़के और लड़कियां को बेचना आसान है। लेकिन इन लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की जरुरत है जिससे इस समस्या को खत्म किया जा सके। साथ ही लोगों को उनके इलाके में अच्छी शिक्षा और बेहतर सुविधाएं देने की जरुरत है, जिससे मां बाप अपने बच्चों को इस तरह ना बेच सकें। इसके साथ ही लड़कियों और महिलाओं के प्रति नजरिया बदलने की भी जरुरत है। हवस से हत्या ही होगी। किसी के चाहत की, किसी के सपने की तो किसी के अहसास की। सामने से इन्हें भला बुरा कहने वाले भी कहीं न कहीं इन वेश्याओं से आकर्षित हो ही जाते है. शायद नसीब की मारी इन लड़कियों की हालत देखकर अगली बार इन्हें देखकर मुहं से गाली नहीं शायद सांत्वना के दो बोल निकल जाए।

– सम्पादक

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो (5, 10, 20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, दूरभाष - 23360150, 9540040339

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

इतिहास की पुस्तकों से गायब हुआ वैदिक इतिहास : जिम्मेदार कौन?

केसी.ई.आर.टी. से गायब किया वैदिक इतिहास, क्या व्यर्थ जाएगी इस देश के लिए आर्यों की कुर्बानियां? आर्यों फिर संघर्ष के लिए तैयार रहो सरकार चुप बैठ सकती है पर आर्य समाज चुप नहीं बैठेगा।

सूचना के अधिकार के तहत पूछे गए एक प्रश्न के जवाब राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) का कहना है कि उसके पास स्कूली किताबों में वैदिक इतिहास का चेप्टर जोड़ने की कोई योजना नहीं है। यह बात संस्थान ने कही है। सूचना में एनसीईआरटी ने कहा कि 2005 राष्ट्रीय पाठ्यक्रम परिचर्या तैयार किए जाने के बाद पुस्तकों में बदलाव किया गया। 2007 में इतिहास की नई किताबें शामिल की गई जिसमें वैदिक इतिहास को नहीं रखा गया है। जबकि इससे पहले तक एन.सी.ई.आर.टी. की एक पुस्तक में वैदिक इतिहास पढ़ाया जा रहा था। लेकिन एनसीईआरटी का कहना है कि विशेषज्ञों की सिफारिश पर पाठ्यक्रम तैयार हुआ था, जिसमें अभी कोई बदलाव होने का प्रस्ताव नहीं है।

वैदिक इतिहास के मुद्दे पर कार्य कर रहे लोगों का कहना है कि एनसीईआरटी ने वामपंथी लेखकों के दबाव में वैदिक साइंस के विषय को हटा दिया। लेकिन आज छात्रों को यह जानने का हक है कि वेद क्या हैं, वैदिक गणित आज भी सामयिक है। इसी प्रकार आर्यन सभ्यता के बारे में आज एनसीईआरटी की किताबों में एक भी लाइन नहीं पढ़ाई जाती है।

एक ओर सरकार ने ऋग्वेद को यूनेस्को के विश्व धरोहरों में शामिल कराया है तथा दूसरी ओर इस वेद के बारे में एनसीईआरटी की इतिहास की किताबों में एक भी लाइन दर्ज नहीं है। आखिर यह काम किसके दबाव में हुआ? तब की तत्कालीन सरकार ने यह फैसला क्यों लिया और आज मौजूदा सरकार इस पर मौन क्यों है?

> ***..... भारत दुनिया का अकेला ऐसा देश है, जहां के आधिकारिक इतिहास की शुरुआत में ही यह बताया जाता है कि भारत में रहने वाले लोग यहां के मूल निवासी नहीं हैं। .....ये सब विदेश से आए हैं। वामपंथी इतिहासकारों ने बताया कि हम आर्य हैं। हम बाहर से आए हैं। कहां से आए? इसका कोई सटीक जवाब नहीं है। फिर भी बाहर से आए। आर्य कहां से आए, इसका जवाब ढूंढने के लिए कोई इतिहास के पन्नों को पलटे, तो पता चलेगा कि कोई सेंट्रल एशिया कहता है, तो कोई साइबेरिया, तो कोई मंगोलिया, तो कोई ट्रांस कोकेशिया, तो कुछ ने आर्यों को स्कैंडेनेविया का बताया। ..... अफसोस इस बात का है कि भारत के लोग जब अपने ही इतिहास को पढ़ते हैं, तो उन्हें गर्व की अनुभूति नहीं होती है। इसका कारण यह भी है कि देश के इन वामपंथी इतिहासकारों ने इस ढंग से इतिहास लिखा है कि जो एक बार पढ़ ले, तो उसकी इतिहास से रुचि ही खत्म हो जाती है। .....***

भारत दुनिया का शायद अकेला ऐसा देश है, जहां के आधिकारिक इतिहास की शुरुआत में ही यह बताया जाता है कि भारत में रहने वाले लोग यहां के मूल निवासी नहीं हैं। भारत में रहने वाले अधिकांश लोग भारत के हैं ही नहीं। ये सब विदेश से आए हैं। वामपंथी इतिहासकारों ने बताया कि हम आर्य हैं। हम बाहर से आए हैं। कहां से आए? इसका कोई सटीक जवाब नहीं है। फिर भी बाहर से आए। आर्य कहां से आए, इसका जवाब ढूंढने के लिए कोई इतिहास के पन्नों को पलटे, तो पता चलेगा कि कोई सेंट्रल एशिया कहता है, तो कोई साइबेरिया, तो कोई मंगोलिया, तो कोई ट्रांस कोकेशिया, तो कुछ ने आर्यों को स्कैंडेनेविया का बताया। आर्य धरती के किस हिस्से के मूल निवासी थे, यह इतिहासकारों के लिए आज भी मिथक है। मतलब यह कि किसी के पास आर्यों का सुबूत नहीं है, फिर भी साइबेरिया से लेकर स्कैंडेनेविया तक, हर कोई अपने-अपने हिसाब से आर्यों का पता बता देता है। यह आज भारत के लोगों की पहचान का सवाल है।

विश्वविद्यालयों में बैठे बड़े-बड़े इतिहासकारों को इन सवालों का जवाब देना है। सवाल पूछने वाले की मंशा पर सवाल उठाकर इतिहास के मूल प्रश्नों पर पर्दा नहीं डाला जा सकता। एनसीईआरटी से वैदिक इतिहास के हटाये जाने पर सरकार जबाब देना होगा। यह दुनिया की सबसे पुरातन सभ्यता है। इतिहास में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह आश्चर्य का विषय है कि जब ग्रीस, रोम और एथेंस का नामों-निशान नहीं था, तब यहां के लोग विश्वरस्तरीय शहर बनाने में कैसे कामयाब हो गए, टाउन-प्लानिंग का ज्ञान कहां से आया और उन्होंने स्वीमिंग पूल बनाने की तकनीक कैसे सीखी? अफसोस इस बात का है कि भारत के लोग जब अपने ही इतिहास को पढ़ते हैं, तो उन्हें गर्व की अनुभूति नहीं होती है। इसका कारण यह भी है कि देश के इन वामपंथी इतिहासकारों ने इस ढंग से इतिहास लिखा है कि जो एक बार पढ़ ले, तो उसकी इतिहास से रुचि ही खत्म हो जाती है। भारतीय इतिहासकारों ने इन्हीं अंग्रेजों के लिखे इतिहास पर आर्यों और द्रविड़ों का भेद किया। बताया कि सिंधु घाटी में रहने वाले लोग द्रविड़ थे, जो यहां से पलायन कर दक्षिण भारत चले गए। अब यह सवाल भी उठता है कि सिंधु घाटी से जब वे पलायन कर दक्षिण भारत पहुंच गए, तो क्या उनकी बुद्धि और ज्ञान सब खत्म हो गया। वे शहर बनाना भूल गए, स्वीमिंग पूल बनाना भूल गए, नालियां बनाना भूल गए, और, बाहर से आने वाले आर्य, जो मूल रूप से खानाबदोश थे, कबीलाई थे, वे वेदों का निर्माण कर रहे थे। दरअसल, वामपंथी इतिहासकारों ने देश के इतिहास को मजाक बना दिया। यह भी एक कारण है कि इतिहास को फिर से लिखा जाना चाहिए। हमारा सभी आर्यों से, आर्य समाजो से, आर्य संस्थाओ से निवेदन है अपने अपने स्तर पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय को पत्र लिखकर विरोध दर्ज कराएं। यदि सरकार इस मुद्दे पर आँख बंद कर बैठना चाह रही हो तो हमारा समस्त भारत विश्व के आर्यों से आह्वान है की आन्दोलन के लिए तैयार रहे। सरकार चुप बैठ सकती है पर आर्य समाज चुप नहीं बैठेगा हमें वो इतिहास चाहिए जिसमें एकता का संचार हो और जो हमारा हौंसला बुलंद कर सके और हम मानव विकास के मानदंडों पर दुनिया में अग्रणी रहें।

यह लेख ब्लॉग पर पढ़ने के लिए निम्न लिखित लिंक पर लॉगऑन करें-
http://sandesharya.blogspot.in/
- राजीव चौधरी

मैं आर्यसमाजी कैसे बना?

आर्य समाज में मिलती है सुख-शान्ति

- श्याम सुन्दर बंसल

मैं गांव नाहरी जिला सोनीपत, हरियाणा का रहने वाला हूं, वर्तमान में गली-7, कृष्ण नगर, करोल बाग नई दिल्ली में रहता हूँ, मेरी आयु 65 वर्ष है। तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के राजधानी कालेज से सन् 1972 में बी. कॉम (स्नातक) किया। आर्य सन्देश व आर्य जगत् (साप्ताहिक) पत्रिका का आजीवन सदस्य हूं। मैं मर्पमान तथा पूर्व में दिल्ली की अनेकों धार्मिक सामाजिक सांस्कृतिक व राजनैतिक संस्थाओं से भी जुडा हुआ हूं जैसे हिन्दी साहित्य सम्मेलन, साहित्य परिषद युवा-अग्रवाल दिल्ली प्रदेश श्री अग्रवाल धर्मशाला ट्रस्ट करोल बाग वैश्य मित्र मण्डल, महाराजा अग्रसेन आर्दश पब्लिक स्कूल पीतमपुरा तथा ओम प्रकाश बाल-विकास मन्दिर स्कूल न्यूरोहतक रोड आदि।

सन् 1990 की बात है जब देव नगर आर्यसमाज के प्रधान स्व. श्री रघुबर दयाल जी होते थे तब मेरा परिचय आर्य समाज देवनगर के मंत्री स्व. श्री श्रजनन्दन प्रकाश जी से किसी कार्यक्रम के दौरान हुआ उन्होंने ही मुझे आर्य समाज के कार्यक्रमों व हवन-यज्ञ आदि में शामिल होने की प्रेरणादी और उन्हीं की ही दी हुई प्रेरणा से मैं आज तक आर्य समाजों के कार्यक्रर्मो में हिस्सा लेता आ रहा हूं मुझे आर्य समाज में आकर जो सुख-शान्ति, समृद्धि, ज्ञान में वृद्धि, अनुशासन व समय की पाबन्दी आदि देखने को मिली वह कही और न ही मिली आज मेरा मकसद आर्यसमाज का अधिक से अधिक प्रचार व प्रसार करना है ताकि आने वाली नई पीढ़ी का भविष्य उजजवल हो सके। मेरा 26 वर्षो का गहन अनुभव है कि आर्य समाज से बढ़कर और कोई संगठन नहीं है जो इतनी स जगता से संगठन व समाज को चला रहा है। इसका कोई सानी नहीं है।

- पूर्व उप-प्रधान,
आर्य समाज देव नगर, करोल बाग, नई दिल्ली

> ***आपके साथ ऐसा क्या हुआ कि आप आर्यसमाज की ओर आकर्षित हुए। यदि आपने भी किसी की प्रेरणा/विचारों से प्रभावित होकर आर्यसमाज में प्रवेश करके वैदिक संस्कृति को अपनाया है तो यह कॉलम आपके लिए ही है। आप अपनी घटना/ प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखकर भेजिए। आपके विवरण को युवाओं की प्रेरणा एवं जानकारी के लिए आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा। हमारा पता है-***
> **'सम्पादक' - साप्ताहिक आर्य सन्देश,**
> **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 email : aryasabha@yahoo.com**

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल : 20-22 अक्टूबर 2016

यात्रा नं. 1 (A) के वे यात्रीगण जिन्होंने 22000/- रुपये में अतिथि भवनों में ठहरने के लिए आवेदन किया है, उनके लिए सूचनार्थ खुशखबरी है कि वे अपना आवेदन **यात्रा नं. 2 (A) के अन्तर्गत 3 सितारा होटल के लिए अपग्रेड करा सकते हैं।** इसके लिए केवल मात्र 9500/- रुपये अतिरिक्त देये होंगे। जो आर्य आर्य महानुभाव इस सुविधा का लाभ प्राप्त करना चाहें वे तुरन्त **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **9500/- रुपये की राशि का डीमांड ड्राफ्ट** यथाशीघ्र **'श्री सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें। अपने आवेदन के साथ पूर्व में भेजा गया पहचान पत्र-पासपोर्ट/अधार/वोटर कार्ड/पैन कार्ड की फोटोप्रति अवश्य भेजें।

- प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा अन्तर्गत नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता सम्पन्न

दयानन्द आदर्श विद्यालय तिलक नगर में हुई नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता सफलापूर्वक सम्पन्न आर्य विद्या परिषद दिल्ली द्वारा आयोजित नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता मंगलवार 9 अगस्त 2016 को दयानंद आदर्श विद्यालय, तिलक नगर के खेलकूद ग्राउंड में पेड़ के नजदीक सम्पन्न हुई। बच्चों ने नुक्कड़ नाटक द्वारा सबका मन मोह लिया।

'अंधविश्वास एवं पाखण्ड' विषय पर प्राइमरी विभाग के नन्हें मुन्हें बच्चों ने जोरदार शब्दों में अंधविश्वास का खंडन एवं पाखंड का विरोध किया। कनिष्ठ वर्ग के छात्रों ने 'घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ' विषय पर सुन्दर प्रस्तुतियाँ दी। 'आओ, संस्कारों की ओर लोट चलें' विषय पर वरिष्ठ वर्ग के छात्रों ने प्रभावशाली ढंग से नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किए। (विशेष आकर्षण) कार्यक्रम की वीडियो रिकार्डिगं भी की गई।

बच्चों के उत्साह वर्द्धन हेतु विद्यालय के प्रधान श्री वीरेन्द्र सरदाना जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुषमा सरदाना जी, मैनेजर श्री नीरज आर्य जी, आर्यसमाज जनकपुरी ए-ब्लाक के प्रधान विक्रम नरुला, आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड के प्रधान श्री वेद प्रकाश जी, श्रीमती शशि खन्ना श्रीमती वीना आर्या जी एवं श्रीमती तृप्ता शर्मा उपस्थित थी। मंच संचालन श्रीमती नीरू जी ने किया।

निर्णायक मंडल में आचार्य श्री आनंदजी, श्रीमती संतोष कपूर जी व श्रीमती मिथलेश निगम जी ने अपना निष्पक्ष निर्णय दिया। तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांन्त्वना पुरस्कार प्रदान किए गए। सभी प्रतियोगिओं को सुंदर प्रमाण पत्र व व्यवहारभानु एवं आर्य समाज की मान्यताएं पुस्तकें प्रदान की गई और विजेता टीम को शील्ड प्रदान की गई। सभी के लिए जलपान की व्यवस्था विद्यालय की ओर से की गई।

श्रीमती वीणा आर्या, संयोजिका

नुक्कड़ नाटक पुरस्कार प्राप्त विद्यालय

वर्ग-1: अन्धविश्वास एवं पाखण्ड
प्रथम-एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल-पंजाबी बाग
द्वितीय-दयानन्द मॉडल स्कूल-विवेक विहार
तृतीय-महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल-शादी खामपुर
चतुर्थ-आर्य वीर मॉडल स्कूल-बादली

वर्ग-2 : घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ
प्रथम-एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल-पंजाबी बाग
द्वितीय-दयानंद आदर्श विद्यालय-तिलक नगर
तृतीय-बिड़ला आर्य गर्ल्स सी. सै. स्कूल-कमला नगर

वर्ग-3 : आओ, संस्कारों की ओर लौट चले
प्रथम-दयानन्द मॉडल स्कूल-विवेक विहार
द्वितीय-एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल-पंजाबी बाग
तृतीय-बिड़ला आर्य गर्ल्स सी. सै. स्कूल-कमला नगर
चतुर्थ-दयानन्द आदर्श विद्यालय-तिलक नगर

गुजरात सभा द्वारा भानुमति श्यामजी कृष्ण वर्मा की 83वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आर्य महिला सम्मेलन सम्पन्न

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा पिछले कुछ वर्षों से महर्षि दयानन्द के मानस पुत्र पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा जी का जन्म दिन व पुण्य तिथि उनके जन्म स्थान मांडवी में मनाने की परम्परा आरम्भ की है। गुजरात सरकार ने मांडवी में पं. श्यामजी कृष्णवर्मा का स्मृतिभवन क्रान्तितीर्थ बनाया है और संचलान भी कर रही है।

पं. श्यामजी वर्मा को उनकी राष्ट्रसेवा के कार्यों में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भानुमति जी सम्मति व सहयोग न होता तो वह जितना कार्य कर पाए, शायद नहीं कर पाते। अत: श्रीमती भानुमति के योगदान को उजागर करने हेतु गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसमाज मांडवी के सान्निध्य में 83वीं पुण्य तिथि पर 22 अगस्त, 2016 को क्रान्तितीर्थ में आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ पं. दिवाकर शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ। यज्ञोपरान्त आर्य महिला सम्मेलन का प्रारम्भ श्रीमती भानुबेन वी.एच.पटेल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती सोनलनबेन शेठिया थी। मुख्य वक्ता के रूप में श्रीमती जयाबेन पटेल, श्रीमती आरती शास्त्री, श्रीमती सुजाताबेन भायानी रहीं। सभी वक्ताओं ने श्रीमती भानुमति जी को एक आदर्श पत्नी, कर्त्तव्य पारायणा व अडिग मनोबल वाली महिला बताते हुए वर्तमान में चल रहे स्त्री सशक्तिकरण अभियान की चर्चा की। एक पुरुष की प्रगति में स्त्री की भूमिका एवं महिला उद्धार में महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के योगदान पर चर्चा की गई। यह कार्यक्रम पूर्णत: महिला द्वारा संचालित किया गया।

सम्भवत: यह पहला अवसर था जब पं. श्यामजीकृष्ण वर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती भानुमति जी की स्मृति में कोई आयोजन किया गया, इसका श्रेय गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की दिया जा सकता है। इस अवसर पर पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा के घर के ट्रस्टी श्री हीराजीभाई कारानी को सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्यसमाज मांडवी के प्रधान श्री नवीनभाई वेलानी, मन्त्री श्री लखमशीभाई वाडिया व उनकी पूरी टीम का प्रशंसनीय योगदान रहा। धन्यवाद ज्ञापन क्रान्तितीर्थ के प्रबन्धक श्री बमकिमभाई पटणी ने किया।

- हरमुख परमार, सभामन्त्री

सुदर्शन टीवी - बिन्दास बोल : मदर टेरेसा जैसा सम्मान हिन्दू सन्तों को क्यों नहीं

सुदर्शन टी.वी. पर मदर टेरेसा को सन्त की उपाधि दिए जाने पर कार्यक्रम 'बिन्दास बोल' में आर्यसमाज का पक्ष रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण सोमवार 4 सितम्बर को किया गया। मदर टेरेसा की फोटो के साथ खड़ा होने या देखने से दो लोगों की असाध्य बीमारी दूर हो गई, इसलिए उसे संत का दर्जा दिया गया, ऐसा बताया गया। इस कार्यक्रम में श्री विनय आर्य जी द्वारा उठाए गए सवाल - क्या अब पोप और संत का दर्जा देने वाले समारोह में भाग लेने वाले भारत राजनेता गरीब और बीमार लोगों को मदर टेरेसा के फोटो के साथ खड़ा होकर ठीक होन का नया पैगाम देने जा रहे हैं? क्या पोप अब सब रोगों को ठीक करने की गारंटी ले सकेंगे? क्या ये राजनेता इस चमत्कार की पद्धति से अपना ईलाज कराना चाहेंगे? क्या ये सरकारी आयोजन था, जिस पर देश की जनता के करोड़ों रुपये व्यय किए गए?

यदि आपने यह कार्यक्रम न देखा हो तो आप अभी यू-ट्यूब पर देख सकते हैं। कार्यक्रम देखने के लिए मोबाइल/कम्प्यूटर/लैपटॉप पर निम्नलिखित लिंक को सर्च करें -

https://www.youtube.com/watch?v=vB21tjXZfIU& feature=youtu.be

प्रथम पृष्ठ का शेष

राशियाँ दान के तौर पर मिलती थी। सबसे बड़ी बात यह थी की मदर ने कभी इस विषय में सोचने का कष्ट नहीं किया की उनके धनदाता की आय का स्रोत्र एवं प्रतिष्ठा कैसी थी। उदहारण के लिए अमेरिका के एक बड़े प्रकाशक रॉबर्ट मैक्सवैल, जिन्होंने कर्मचारियों की भविष्य निधि फण्ड्स में 450 मिलियन पाउंड का घोटाला किया। उसने मदर टेरेसा को 1.25 मिलियन डालर का चन्दा दिया। मदर टेरेसा मैक्सवैल की पृष्ठभूमि को जानती थी। हैती के तानाशाह जीन क्लाऊड डुवालिये ने मदर टेरेसा को सम्मानित करने बुलाया। मदर टेरेसा कोलकाता से हैती सम्मान लेने गई। जिस व्यक्ति ने हैती का भविष्य बिगाड़कर रख दिया। गरीबों पर जमकर अत्याचार किये और देश को लूटा। टेरेसा ने उसको "गरीबों को प्यार करने वाला" कहकर तारीफों के पुल बांधे थे। मदर टेरेसा को चार्ल्स कीटिंग से 1.25 मिलियन डालर का चन्दा मिला था। ये कीटिंग महाशय वही हैं जिन्होंने "कीटिंग सेविंग्स एन्ड लोन्स" नामक कम्पनी 1980 में बनाई थी और आम जनता और मध्यम वर्ग को लाखों डालर का चूना लगाने के बाद उसे जेल हुई थी। अदालत में सुनवाई के दौरान मदर टेरेसा ने जज से कीटिंग को माफ करने की अपील की थी। उस वक्त जज ने उनसे कहा कि जो पैसा कीटिंग ने गबन किया है क्या वे उसे जनता को लौटा सकती हैं? ताकि निम्न-मध्यम वर्ग के हजारों लोगों को कुछ राहत मिल सके, लेकिन तब वे चुप्पी साध गई।

यह दान किस स्तर तक था इसे जानने के लिए यह पढ़िए। मदर टेरेसा की मृत्यु के समय सुसान शील्ड्स को न्यूयॉर्क बैंक में पचास मिलियन डालर की रकम जमा मिली। सुसान शील्ड्स वही हैं जिन्होंने मदर टेरेसा के साथ सहायक के रूप में नौ साल तक काम किया। सुसान ही चैरिटी में आये हुए दान और चेकों का हिसाब-किताब रखती थी। जो लाखों रुपया गरीबों और दीन-हीनों की सेवा में लगाया जाना था। वह न्यूयॉर्क के बैंक में यूँ ही फालतू पड़ा था?

दान से मिलने वाले पैसे का प्रयोग सेवा कार्य में शायद ही होता होगा इसे कोलकाता में रहने वाले अरूप चटर्जी ने अपनी पुस्तक 'द फाइनल वर्डिक्ट' पढ़िए। लेखक लिखते हैं ब्रिटेन की प्रसिद्ध मेडिकल पत्रिका Lancet के सम्पादक डॉ.रॉबिन फॉक्स ने 1991 में एक बार मदर के कलकत्ता स्थित चौरिटी अस्पतालों का दौरा किया था। उन्होंने पाया कि बच्चों के लिये साधारण 'अनल्जेसिक दवाईयाँ' तक वहाँ उपलब्ध नहीं थी और न ही 'स्टर्लाइज्ड सिरिंज' का उपयोग हो रहा था। जब इस बारे में मदर से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि "ये बच्चे सिर्फ मेरी प्रार्थना से ही ठीक हो जायेंगे"। मिशनरी में भर्ती हुए आश्रितों की हालत भी इतने धन मिलने के उपरांत भी उनकी स्थिति कोई बेहतर नहीं थी। मिशनरी की नन दूसरों के लिए दवा से अधिक प्रार्थना में विश्वास रखती थी। जबकि खुद अपना इलाज कोलकाता के महंगे से महंगे अस्पताल में कराती थीं। मिशनरी की एम्बुलेंस मरीजों से अधिक नन आदि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का कार्य करती थीं। यही कारण था की मदर टेरेसा की मृत्यु के समय कोलकाता निवासी उनकी शवयात्रा में न के बराबर शामिल हुए थे।

मदर टेरेसा अपने रूढ़िवादी विचारों के लिए सदा चर्चित रही। बांग्लादेश युद्ध के दौरान लगभग साढ़े चार लाख महिलायें बेघर हुई और भागकर कोलकाता आईं उनमें से अधिकतर के साथ बलात्कार हुआ था जिसके कारण वे गर्भवती थीं। मदर टेरेसा ने उन महिलाओं के गर्भपात का विरोध किया और कहा था कि - "गर्भपात कैथोलिक परम्पराओं के विरुद्ध है और इन औरतों की प्रेग्नेंसी एक पवित्र आशीर्वाद है।" मदर टेरेसा की इस कारण जमकर आलोचना हुई थी।

मदर टेरेसा ने इन्दिरा गाँधी की आपातकाल लगाने के लिये तारीफ की थी और कहा कि '**आपातकाल लगाने से लोग खुश हो गये हैं और बेरोजगारी की समस्या हल हो गई है।**' गाँधी परिवार ने उन्हें इस बड़ाई के लिए "**भारत रत्न**" का सम्मान देकर उनका "**ऋण**" उतारा।

भोपाल गैस त्रासदी भारत की सबसे बड़ी औद्योगिक दुर्घटना है, जिसमें सरकारी तौर पर 4000 से अधिक लोग मारे गये और लाखों लोग अन्य बीमारियों से प्रभावित हुए। उस वक्त मदर टेरेसा ताबड़-तोड़ कलकत्ता से भोपाल आईं, किस लिये? क्या प्रभावितों की मदद करने? जी नहीं, बल्कि यह अनुरोध करने कि यूनियन कार्बाईड के मैनेजमेंट को माफ कर दिया जाना चाहिये और अन्ततः वही हुआ भी, वारेन एंडरसन ने अपनी बाकी की जिन्दगी अमेरिका में आराम से बिताई। भारत सरकार हमेशा की तरह किसी को सजा दिलवा पाना तो दूर, ठीक से मुकदमा तक नहीं कायम कर पाई।

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रकार क्रिस्टोफर हिचेन्स ने 1994 में एक डॉक्यूमेंट्री बनाई थी, जिसमें मदर टेरेसा के सभी क्रियाकलापों पर विस्तार से रोशनी डाली गई थी। बाद में यह फिल्म ब्रिटेन के चैनल-फोर पर प्रदर्शित हुई और इसने काफी लोकप्रियता अर्जित की। बाद में अपने कोलकाता प्रवास के अनुभव पर उन्होंने एक किताब भी लिखी **"हैल्स एन्जेल" (नर्क की परी)**। इसमें उन्होंने कहा है कि 'कैथोलिक समुदाय विश्व का सबसे ताकतवर समुदाय है। जिन्हें पोप नियंत्रित करते हैं, चैरिटी चलाना, मिशनरियाँ चलाना, धर्म परिवर्तन आदि इनके मुख्य काम है। जाहिर है कि मदर टेरेसा को टेम्पलटन सम्मान, नोबल सम्मान, मानद अमेरिकी नागरिकता जैसे कई सम्मान इसी कारण से मिले।'

ईसाइयों के लिए यही मदर टेरेसा दिल्ली में 1994 में दलित ईसाईयों के आरक्षण की हिमायत करने के लिए धरने पर बैठी थी। तब तत्कालीन मंत्री सुषमा स्वराज ने उनसें पूछा था की क्या मदर टेरेसा दलित ईसाई जैसे उद्बोधनों के रूप में चर्च में जातिवाद का प्रवेश करवाना चाहती हैं। 1947 में देश आजाद होने के बाद महाराष्ट्र के अनेक मिशन के चर्चों को आर्यसमाज ने खरीद लिया क्योंकि उनका संचालन करने वाले ईसाई इंग्लैंड लौट गए थे। कुछ दशकों के पश्चात ईसाइयों ने उस संपत्ति को दोबारा से आर्यसमाज से खरीदने का दबाव बनाया। आर्यसमाज के अधिकारीयों द्वारा मना करने पर मदर टेरेसा द्वारा आर्यसमाज के पदाधिकारियों को देख लेने की धमकी दी गई थी। कमाल की संत?

मदर टेरेसा जब कभी बीमार हुईं तो उन्हें बेहतरीन से बेहतरीन कार्पोरेट अस्पताल में भर्ती किया गया। उन्हें हमेशा महंगा से महंगा इलाज उपलब्ध करवाया गया। यही उपचार यदि वे अनाथ और गरीब बच्चों (जिनके नाम पर उन्हें लाखों डालर का चन्दा मिलता रहा) को भी दिलवाती तो कोई बात होती, लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। **एक बार कैंसर से कराहते एक मरीज से उन्होंने कहा कि *"तुम्हारा दर्द ठीक वैसा ही है जैसा ईसा मसीह को सूली पर हुआ था, शायद महान मसीह तुम्हें चूम रहे हैं।"* तब मरीज ने कहा कि *"प्रार्थना कीजिये कि जल्दी से ईसा मुझे चूमना बन्द करें"*।**

मदर टेरेसा की मृत्यु के पश्चात भी चंदा उगाही का कार्य चलता रहे और धर्मान्तरण करने में सहायता मिले इसके लिए एक नया ड्रामा रचा गया। पोप जॉन पॉल को मदर को 'सन्त' घोषित करने में जल्दबाजी की गई। सामान्य रूप से संत घोषित करने के लिये जो पाँच वर्ष का समय (चमत्कार और पवित्र असर के लिये) दरकार होता है, पोप ने उसमें भी ढील दे दी। पश्चिम बंगाल की एक क्रिश्चियन आदिवासी महिला जिसका नाम मोनिका बेसरा था। उसे टीबी और पेट में ट्यूमर हो गया था। बेलूरघाट के सरकारी अस्पताल के डॉ. रंजन मुस्ताफ उसका इलाज कर रहे थे। उनके इलाज से मोनिका को काफी फायदा हो रहा था और एक बीमारी लगभग ठीक हो गई थी। अचानक एक दिन मोनिका बेसरा ने अपने लॉकेट में मदर टेरेसा की तस्वीर देखी और उसका ट्यूमर पूरी तरह से ठीक हो गया। मिशनरी द्वारा मोनिका बेसरा के ठीक होने को चमत्कार एवं मदर टेरेसा को संत के रूप में प्रचारित करने का बहाना मिल गया। यह चमत्कार का दावा हमारी समझ से परे है। जिन मदर टेरेसा को जीवन में अनेक बार चिकित्सकों की आवश्यकता पड़ी थी। उन्हीं मदर टेरेसा की कृपा से ईसाई समाज उनके नाम से प्रार्थना करने वालो को बिना दवा केवल दुआ से, चमत्कार से ठीक होने का दावा करता होना मानता है। अगर कोई हिन्दू बाबा चमत्कार द्वारा किसी रोगी के ठीक होने का दावा करता है तो सेक्युलर लेखक उस पर खूब चुस्कियां लेते है। मगर जब पढ़ा लिखा ईसाई समाज ईसा मसीह से लेकर अन्य ईसाई मिशनरियों द्वारा चमत्कार होने एवं उससे सम्बंधित मिशनरी को संत घोषित करने का महिमा मंडन करता है तो उसे कोई भी सेक्युलर लेखक दबी जुबान में भी इस तमाशे को अन्धविश्वास नहीं कहता।

जब मोरारजी देसाई की सरकार में तत्कालीन सांसद ओमप्रकाश त्यागी द्वारा धर्म स्वातन्त्र्य विधेयक के रूप में धर्मान्तरण के विरुद्ध बिल पेश हुआ तो इन्हीं मदर टेरेसा ने प्रधानमंत्री को पत्र लिख कर इस विधेयक का विरोध किया और कहा था की ईसाई समाज सभी समाज सेवा की गतिविधियां जैसे की शिक्षा, रोजगार, अनाथालय आदि को बंद कर देगा। अगर उन्हें अपने ईसाई मत का प्रचार करने से रोका जायेगा। तब प्रधान मंत्री देसाई ने कहा था *'इसका अर्थ क्या यह समझा जाये की ईसाईयों द्वारा की जा रही समाज सेवा एक दिखावा मात्र है। उनका असली प्रयोजन तो धर्मान्तरण हैं।'* देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री का उत्तर ईसाई समाज की सेवा के आड़ में किये जा रहे धर्मान्तरण को उजागर करता है।

इस लेख को पढ़कर हिन्दुओं का धर्मान्तरण करने वाली मदर टेरेसा को कितने लोग संत मानना चाहेंगे?

यह लेख ब्लॉग पर पढ़ने के लिए निम्न लिखित लिंक पर लॉगऑन करें-
http://sandesharya.blogspot.in/

- डॉ. विवेक आर्य

सभी आर्यजनों एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि इस लेख को फोटोकॉपी कराकर समाज जन सामान्य वर्ग एवं के प्रबुद्ध लोगों तक अवश्य ही पहुंचाकर जागृति पैदा करें। - सम्पादक

देश पतन की ओर चला

केजरीवाल खुद कहते फिर रहे थे कि कुछ भी गलत हो तो वीडियो बना लो। बन गया विडियो दिल्ली के महिला एवं बाल कल्याण मंत्री संदीप कुमार का किसी महिला से नाजायज सम्बन्ध का वीडियो लीक हुआ। हालाँकि उन्हें तत्काल पद प्रभाव से हटा दिया जाना सामाजिक और राजनितिक लिहाज से सराहनीय कदम कहा जा सकता है। परन्तु इसके बाद भी यह मामला दबने का नाम नहीं ले रहा है। अब विवादित सीडी में सहयोगी महिला जो कि अब पीड़िता भी है, ने थाने पहुंचकर मामले में को और तीखा बनाया तो वही आम आदमी पार्टी के ही नेता आशुतोष ने अपने एक विवादित ब्लॉग के माध्यम से पूर्व महिला कल्याण मंत्री संदीप कुमार को क्लीनचिट देते हुए लिखा है कि भारतीय इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है जहां हमारे नायकों और नेताओं ने सामाजिक बंधनों से बेपरवाह होकर अपनी इच्छाओं की पूर्ति की। पंडित जवाहर लाल नेहरु की कई सहयोगी महिलाओं से प्रेम संबंधों के किस्से चटखारे लेकर कहे-सुने जाते थे, लेकिन इससे उनका करियर नहीं बरबाद हुआ। एडविना के साथ उनके रिश्तों की खूब चर्चा हुई। सारी दुनिया इसके बारे में जानती थी। उनका ये लगाव पंडित नेहरु के आखिरी सांस तक बना रहा। क्या वो पाप था? आशुतोष यहीं नहीं रुके उन्होंने आगे लिखा इतिहास इसका भी गवाह है ब्रह्मचर्य से अपने प्रयोग के लिए गांधी जी बाद के दिनों में अपनी दो भतीजियों के साथ नंगे सोते थे। नेहरू ने उन्हें समझाया कि ऐसा न करें वर्ना देश उनके खिलाफ हो जाएगा, मगर गांधी नहीं माने। उनकी यह बात सही हो सकती है कि किसी के भी निजी जीवन के आंतरिक पलो में ना झाँका जाये पर यह मामला देश की राजधानी दिल्ली के मंत्री और वो भी महिला और बाल कल्याण मंत्री से जुडा है! इसका मतलब एक बार फिर राजनीति शर्मसार हुई या कहें कि देश पतन की और चला।

इस मामले को समझने के लिए हमें एक पुन: थोडा अतीत का रुख करना पड़ेगा। दरअसल अन्ना के लोकपाल आन्दोलन रामलीला मैदान की भूमि के उपजे आप पार्टी के सयोजक अरविन्द केजरीवाल पिछले कुछ सालों पहले देश के नौजवानों के लिए एक आशा बनकर उभरे थे कि देश अरविन्द के जरिये एक नैतिकता के मूल्यों में बंध जायेगा भ्रष्टाचार काला बाजारी बंद होने के साथ इस राजनीति के खेल में अरविन्द पारंपरिक वर्तमान राजनीति को चुनौती देंगे और पुराने खिलाड़ियों को नई वास्तविकताओं के साथ नई पीढ़ी के साथ नये विचारों के साथ देश के साथ जुड़ना पड़ेगा किन्तु हाल ही में अरविन्द और उसकी टीम द्वारा राजनैतिक व सामाजिक मूल्यों की उड़ती धज्जियों के देखकर शायद एक फिर आज का युवा खुद को विकल्पहीन होकर निराशा के रास्ते पर लिए खड़ा है। हो सकता है कल लोग संदीप कुमार का नाम भूल जाये आशुतोष गुजरे जमाने की चीज हो जाये लेकिन लोग शायद ये बात नहीं भूलेंगे कि नेता तो ऐसे ही होते है। आशुतोष ने उदहारण दिए पता नहीं उनमें कितना दम है। पर मैं यह जानता हूँ कि अगर हम राजनेताओं का उदहारण दें तो हमें नेताजी सुभाषचंद्र बोस, सरदार पटेल, लालबहादुर शास्त्री, चौधरी चरणसिंह, जैसे बहुत सारे ऐसे नेता मिल जायेंगे जिनके चरित्र धवल हैं। क्या आज इनके उदहारण कोई मायने नही रखतें? प्रजातन्त्र में चर्चा, आलोचना और समालोचना का अधिकार सबको है। सत्तापक्ष के कार्यों की उचित आलोचना, उसको आईना दिखाने का काम होना ही चाहिए। लेकिन ऐसा करते समय सफेद झूठ का सहारा लेना, गाली और अपशब्दों का उपयोग करना बिलकुल उचित नहीं है। किसी भी देश की संस्कृति उस देश के बुजुर्गों, पूर्वजों और महापुरुषों के इर्दगिर्द घुमती है जिनसे हम सीखते हैं और फिर उस संस्कृति को अगली पीढ़ी के हाथों में सौंपते हैं। जाहिर सी बात यदि हम उस संस्कृति के मूल्यों में कुछ ना जोड़ पाए तो भी हमें ये भी अधिकार नहीं है कि हम अपने सामाजिक व राजनैतिक स्वार्थ के लिए उसे खंडित कर अगली पीढ़ी के ऊपर थौप कर भाग जायें।

मैं परिवर्तन के खिलाफ नहीं हूँ। खराब व्यवस्था कोई भी हो, वह हटनी चाहिए, पर उसकी जगह कोई ऐसी व्यवस्था जरुर आनी चाहिए जो स्थाई हो, जिसकी गरिमा हो, जिसका स्थापित मूल्य हो! लेकिन जिस तरह आशुतोष जोकि अब एक नेता भी हैं, ने पूर्व में लिखा था कि यदि कोई लड़की शादी से पहले बहुत सारे शारीरिक सम्बन्ध स्थापित नहीं करती तो वो समाज की दौड़ में पीछे रह जाती है। शायद हमारी सभ्यता और संस्कृति में इस तरह बयान को एक बेहद ओछी हरकत कहा जायेगा। क्या आशुतोष बता सकते हैं कि आज एक महिला सिर्फ यौन सम्बन्ध के लिए ही रह गयी है? उसका वजूद यही तक सिमित रह गया है? क्या वह समाज की दौड़ पदक जीतकर, डाक्टर बनकर, संगीत, या आई.ए.एस. अफसर या फिर देश की राजनीति का हिस्सा बनकर नहीं जीत सकती? ऐसा नहीं है कि सिर्फ आशुतोष ही ऐसे नेता हैं। समय-समय पर राजनीति के अन्दर से ऐसे गन्दी मानसिकता के नेता लगभग सभी पार्टियों में देखे गये हैं।

आज वर्तमान परिदृश्य में राजनैतिक पार्टियों के शीर्ष नेता स्वयं एक दूसरों पर कीचड़ उछालने मे व्यस्त हैं। इनकी जबान से जनता की जरूरतें, उनके मुद्दे गायब हो चुके हैं। अपने स्वार्थ और लाभ सर्वोपरी हो गये हैं, चाहे उसके लिए किसी भी हद तक जाना पड़े। आज अल्पसंख्यक और दलित दो मुद्दे ऐसे हो गये हैं कि इनसे जुड़कर या किसी को जोड़कर नेता समाज में एक विघटन पैदा कर रहे हैं। जैसे अभी आप सभी ने देखा कि अपने कुकर्म पर पकड़े जाने के बाद संदीप कुमार ने कहा कि में दलित हूँ, इस वजह से मुझे फंसाया जा रहा है। ये राजनीति में एक समाज को तोड़ने वाला गन्दा-सा चलन बन गया है। जनता को ऐसे नेताओं को तिरस्कार करना चाहिए, तभी राजनीति स्वस्थ होगी, तभी देश स्वस्थ होगा। यदि इसके बाद आशुतोष और आम आदमी पार्टी, इतिहास के कुछ कारनामों को मानक बना रहे हैं तो उन्हें मुबारक। वे फोलो करें। देश को कोई आपत्ति नहीं है पर यह कृत्य देश के नौजवानों को न सिखाएं।

यह लेख ब्लॉग पर पढ़ने के लिए निम्न लिखित लिंक पर लॉगऑन करें-
http://sandesharya.blogspot.in/

- सम्पादक

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है। **वार्षिक शुल्क 250/- रुपये** तथा **आजीवन शुल्क** (दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - ***सम्पादक***

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है।
- सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

जब विनायक राव जी के घर पर धावा बोला गया

निजाम राज्य के प्रसिद्ध आर्यनेता पण्डित विनायकरावजी के निवास-स्थान पर सहस्त्रों मुसलमानों ने सरकार की छत्रछाया व षड्यन्त्र से आक्रमण कर दिया। ऐसा लगता था कि उस दिन घर में कोई भी प्राणी बच न पाएगा। उस समय राव साहब के घर पर उनका नन्हा बेटा, एक सिख द्वारपाल, राज्य के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी हमारे स्वर्गीय मित्र श्री अशोक आर्य, श्री सोहनलाल आदि कुछ आर्यपुरुष थे।

प्रश्न यह था कि अब क्या किया जाए। क्रान्तिवीर अशोक आर्य को एक अद्‌भुत उपाय सूझा। आपने अपनी तेजस्वी आँखों से विनायकरावजी की ओर देखा और ओजस्वी वाणी से ये शब्द कहे, 'अपना गाँधीवाद एक ओर रखिए और आर्षप्रज्ञा से कार्य कीजिए।'' तो क्या किया जाए? राव साहब का प्रश्न था। अशोकजी ने कहा, इस नन्हें बालक को तो अनाज की बोरियों के पीछे छिपा देते हैं ताकि यदि हम मारे भी जाएँ तो भी यह बच जाए।

आपके पास अपने पिता श्री केशवरावजी का पिस्तौल है तो मुझे दे दें। अल्मारी से पिस्तौल निकाला गया। कुछ गोलियाँ भी मिल गई। उस दिन रात्रि में मराठवाड़ा के कुछ आर्यों का विनायकरावजी के यहाँ भोजन होना था। उसकी तैयारियाँ हो रही थीं। कुछ भाजियाँ, चटनियाँ आदि तैयार थीं। पत्तलें भी मँगवाई हुई थीं।

अशोकजी साथियों को लेकर छत पर चढ़ गये और पत्तलों को भाजियाँ और चटनी लगाकर पाँच-पाँच, दस-दस इकट्ठी थोड़ी-थोड़ी देर बाद ऊपर से नीचे फेंकने लगे। नारे लगा रही भीड़ में से आवाजें आने लगीं, ''अरे मराठवाड़ा से कई आर्य पण्डितां आये हुए हैं।''

हैदराबादी उर्दू में 'पण्डितों' नहीं पण्डिताँ-'औरतों' नहीं औरताँ बोला जाता है। इससे लगा कि योजना का प्रयोजन पूरा होने जा रहा है। आर्यों ने और जोश से पत्तलें गन्दी कर-करके नीचे फेंकी। आक्रमणकारियों के दिल दहलने लगे। वे समझे कि आर्यों को इस षड्यन्त्र का कुछ आभास मिल गया है, अत: उनकी भी कुछ तैयारी है।

अब अशोकजी ने नया कार्य आरम्भ किया। वह छत के मुँडेर की ओट से कभी एक कोने से, कभी दूसरे से, कभी कहीं से एक-आध गोली चला देते। इससे दंगई मुसलमान और भयभीत हुए। इस संघर्ष में बहुत समय लग गया। इस आक्रमण की सूचना सारे हैदराबाद नगर की जनता तक पहुँचने लगी। निजामशाही को कुछ चिन्ता हुई। कुछ अधिकारियों को संकेत मिला। वे मुसलमानों को वापस ले-गये। यह भीड़ पन्द्रह सहस्त्र तक थी। श्री अशोक आर्य ने यह घटना मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के डॉ. चन्द्रभानु व मुझे सुनाई। इस घटना का विवरण तो सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य में मिल जाता है। आर्य कैसे बच पाये?' इसका वृत्तान्त 1938 ई. में देना तो नीतिमत्ता न थी। स्मरण रहे घर पर केवल 3-4 व्यक्ति ही तो थे।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आर्यसमाज रोहतास नगर का
51वां श्रावणी पर्व महोत्सव

22-25 सितम्बर, 2016
यज्ञ : प्रात: 6:45 से 8:15 बजे
ब्रह्मा : पं. सन्दीप कुमार शास्त्री
भजन : पं. सहदेव सरस जी
प्रवचन : आचार्य राजू वैज्ञानिक
भजन-प्रवचन : सायं 6:30 से 8:30 बजे
पूर्णाहुति एवं समापन : 25 सितम्बर
प्रात: 7:30 बजे से दोपहर 1 बजे
विशेष आग्रह : अन्धविश्वास के विरुद्ध जागरुकता बढ़ाने के लिए छोटे बच्चों को कार्यक्रम मे अवश्य लाएं।

- श्रीमती सुषमा यति, प्रधान

आर्यसमाज सागरपुर में
संगीतमय वेद कथा

15-18 सितम्बर, 2016
प्रभातफेरी : 12-13-14 सितम्बर
यज्ञ : प्रात: 7 से 8 बजे
ब्रह्मा एवं भजन: पं. देशराज 'सत्येच्छु'
वेद कथा : स्वामी यज्ञमुनि 'वानप्रस्थी'
सायंकालीन भजन-प्रवचन : 3:30- 6:30
स्थान : नगरवन पार्क, सागरपुर
पूर्णाहुति एवं समापन : 18 सितम्बर
प्रात: 7-10 बजे सायं 3:30-6'30 बजे
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

- मानधाता सिंह आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज सै. 15 रोहिणी का
श्रावणी पर्व सम्पन्न

आर्य समाज सैक्टर-15 रोहिणी श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में महायज्ञ का आयोजन 21/8/2016 को किया। जिसमें क्षेत्रीय विद्यायक श्री विजेन्द्र कुमार गुप्ता एवं निगम पार्षद श्री विजय प्रकाश पाण्डे ने पधार कर अपने आशीर्वचन प्रदान किए। इस अवसर उत्तरी वेद प्रचार मण्डल प्रतिष्ठित सदस्य श्री सुरेन्द्र गुप्ता, श्री सुरेन्द्र चौधरी एवं के. सी. पाहूजा तथा आर्यजन उपस्थित हुए। इस कार्यक्रम का संचालन श्री हरीओम आकाश ने किया। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. वीरेन्द्र प्रसाद शारनी तथा वेद पाठी श्री राजेश कुमार शास्त्री थे। अन्त में शान्तिपाठ तथा ऋषि लंगर का आयोजन भी किया गया। *- प्रदीप गुप्ता, मन्त्री*

आर्यसमाज बी.एन.पू. शालीमार बाग में
श्रावणी उपाकर्म एवं वेदकथा

पूर्णाहुति एवं समापन समारोह
11 सितम्बर, 2016
यज्ञ : प्रात: 8 से 9:30 बजे
ब्रह्मा : आचार्य वेद प्रकाश जी
भजन : श्री लक्ष्मीकान्त जी
आर्य सम्मेलन : प्रात: 11:15 बजे से
विषय : वेद एवं मानव कल्याण
मुख्य वक्ता : आचार्य वेद प्रकाश जी
इस अवसर पर सर्वश्री धर्मपाल आर्य जी, श्री विनय आर्य जी, डॉ. महेश विद्यालंकार एवं डॉ. धर्मपाल जी भी वक्तव्य देंगे।

- नरेन्द्र अरोड़ा, मन्त्री

आर्यसमाज झिलमिल कालोनी का
वार्षिकोत्सव समारोह

11 सितम्बर प्रात: 8:30 से 1:30 बजे
यज्ञ: प्रात: 8:30 बजे
ब्रह्मा : पं. रघुनाथ देव वेदभूषण जी
बच्चों के कार्यक्रम : प्रात: 11 बजे से
मार्गदर्शन : श्री विनय आर्य जी
आप सब सादर आमन्त्रित हैं।

- सुनहरी लाल यादव, मन्त्री

आर्यसमाज सै. 22 ए चंडीगढ़ का
वेद प्रचार सप्ताह

समापन समारोह : 11 सितम्बर, 2016
यज्ञ पूर्णाहुति: प्रात: 7 से 9 बजे
वैदिक आर्ष शिक्षा संस्कृति रक्षा सम्मेलन
भजन : श्री भानु प्रकाश आर्य जी
प्रवचन : डॉ. सोमदेव शास्त्री

- प्रेमचन्द गुप्ता, मन्त्री

हर वृक्ष ऑक्सीजन की फैक्ट्री

हर वृद्वा ऑक्सीजन की फैक्ट्री है, वृक्षों से हमें प्राणवयु मिलती है। अत: हमें अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर नियमित सिंचित करना संरक्षण करना चाहिए। ये विचार जिला आर्य सभा कोटा के प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने गायत्री फर्टिलाइजर फैक्टरी में वृक्षारोपण करते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर गुग्गल, बेल पत्र और रुद्राक्ष के पौधे रोपित किए गए।

- अरविन्द पाण्डेय, प्रचार सचिव

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज मानसरोवर पार्क शाहदरा, दिल्ली-32
प्रधान :श्रीमती स्वस्तियति
मंत्री :श्री सन्दीप कुमार उपाध्याय
कोषाध्यक्ष :श्री फूलचन्द आर्य

आर्य समाज पटेल नगर, नई दिल्ली-110008
प्रधान :श्री विजय कुमार भाटिया
मंत्री :श्री कुलभूषण गुप्ता
कोषाध्यक्ष :श्री सुमित आनन्द

रामगली आर्य समाज हरिनगर, घंटाघर, नई दिल्ली-110064
प्रधान :श्रीमती राजेश्वरी आर्या
मंत्री :श्री श्रीपाल सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष :श्री हृदयेश शर्मा

कुष्ठ रोगियों को खाद्यान्न बांटे

कुष्ठ रोगी समाज के अभिन्न अंग हैं। उनकी सेवा सुश्रुषा करके आत्मिक शांति का अहसास होता है। हम समय-समय पर इनके बीच पहुंचकर इन्हें खुशी दे सकते हैं। ये विचार एमबीएस अस्पताल के केंसर रोग विभागाध्यक्ष डॉ. आर.के. तंवर ने हरिओम नगर कच्ची बस्ती में आर्य समाज जिला सभा की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में महिलाओं को साड़ियां व खाद्यान्न सामग्री बांटते हुए व्यक्त किये।

इस अवसर पर जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने रघुराज सिंह आर्य के परिवार की ओर से उपलब्ध साड़ियां एवं खाद्यान्न सामग्री तथा जेके लोन अस्पताल की प्रभारी एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. भारती सक्सेना ने बस्ती में महिलाओं और बच्चों को बिस्किट एवं चिप्स के पैकेट वितरित किये।

- अरविन्द पाण्डेय, का. सचिव

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा के तत्त्वावधान में
16वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

6 नवम्बर 2016, रविवार को देहरादून में आयोजित होगा

सार्वदेक्षिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निदेशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आर्यसमाज धामावाला देहरादून उत्तराखण्ड में 6 नवम्बर 2016 को प्रात: 10 बजे होना निश्चित हुआ है। इससे पूर्व हुए 15 सम्मेलनों के आशातीत एवं सार्थक परिणाम सामने आए हैं। आर्य परिवार परिचय सम्मेलनों को लेकर आर्य जनों में काफी उत्साह है। आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्र अतिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें।

पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम 300/- रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **एक्सिज बैंक** खाता संख्या **910010001816166** करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे। आवेदन पत्र दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तिथि से 15 दिन पूर्व भेज दें, ताकि प्रत्याशी का विवरण पंजीयन पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके। पंजीकरण फॉर्म सभा की वेबसाईट **www.thearyasamaj.org** से डाउनलॉड किए जा सकते हैं अथवा **www.matrimony.thearyasamaj.org** पर **ऑनलाईन पंजीकरण** भी कराए जा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चड्ढा
राष्ट्रीय संयोजक
मो. 9414187428

डॉ. विनय विद्यालंकार
प्रान्तीय संयोजक, उत्तराखण्ड
मो. 09412042430

शोक समाचार

श्री सतीश यादव को पितृशोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रतिष्ठित आर्यसमाज - आर्यसमाज शादीखामपुर के प्रधान एवं महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल के चेयरमैन श्री भगवान सिंह यादव जी का 93 वर्ष आयु में सोमवार 5 सितम्बर, 2016 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन सत नगर स्थित शमशान घाट में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी के साथ-साथ दिल्ली की अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने विदाई दी। श्री भगवान सिंह जी अपने पीछे तीन पुत्रों एवं चार पुत्रवधुओं तथा पौत्र-पौत्रियों से भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। श्रद्धाजंलि सभा 15 सितम्बर को आर्यसमाज शादीखामपुर (निकट मैट्रो पिलर नं 215) में प्रात: 10 से 12 बजे तक आयोजित की जाएगी।

श्री सत्यदेव वर्मा का निधन

आर्यमाज इन्द्रपुरी नई दिल्ली के पूर्व मन्त्री वर्तमान संरक्षक श्री सत्यदेव वर्मा जी का 28 अगस्त, 2016 लगभग 81 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। इस अवसर पर सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी सहित स्थानीय आर्यसमाजों के अनेक पदाधिकारीगण उपस्थित थे। उनके पूज्य पिता लाल भगतराम जी एडवोकेट आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर के उप प्रधान भी रहे। उन्हीं से उन्हें आर्य संस्कार पैतृक रूप में प्राप्त हुए। श्री सत्यदेव वर्मा जी द्वारा की गई आर्यसमाज की सेवाओं के लिए आर्य केन्द्रय सभा दिल्ली द्वारा उन्हें सम्मानित भी किया गया है। वे अपने पीछे पुत्र-पुत्रियों तथा पौत्र-पौत्रियों से भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

श्री सन्तोष शास्त्री को पितृशोक

आर्यसमाज मुलुंड, मुम्बई के धर्माचार्य वीरपाल शास्त्री जी, ग्राम मुईउद्दीनपुर के पूर्व प्रधान श्री वीरेश कुमार जी एवं आर्यसमाज वजीरपुर जे.जे. कालोनी दिल्ली के धर्माचार्य संतोष शास्त्री जी के पूज्य पिता श्री कायम सिंह जी का दिनांक 2 सितंबर 2016 को रात्रि 9 बजे निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार गांव कंचनगढ़ी, एटा (उ.प्र.) में पूर्ण वैदिक रीति से आर्ष गुरुकुल एटा के अधिष्ठाता आचार्य देवराज शास्त्री जी, आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी एवं आर्यसमाज, गुजरांवाला टाउन दिल्ली के धर्माचार्य अभयदेव शास्त्री सहित अनेक वैदिक विद्वानों द्वारा सम्पन्न कराया। उनकी स्मृति श्रद्धांजलि सभा उनके पैतृक गांव 14 सितम्बर 2016 को होगी ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 5 सितम्बर से रविवार 11 सितम्बर, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 08/09 सितम्बर, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 7 सितम्बर, 2016

आर्य समाज मानसरोवर पार्क एवं रोहताश नगर दिल्ली के सयुंक्त तत्वावधान में

"जरा याद करो कुर्बानी" कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज मानसरोवर पार्क एवं आर्य समाज रोहताश नगर शाहदरा दिल्ली के सयुंक्त तत्वावधान में आरोहण म्युजिकल्स के द्वारा "जरा याद करो कुर्बानी" कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ दीप प्रज्ज्वलन व वेद मन्त्रों की ऋचाओं से हुआ। सबसे पहले हुवे नृत्य नाटिका जो की संस्कृत गीत "भारतं भारतं भवतु भारतं" प्रस्तुत हुई। सबसे छोटी कलाकारा पांच वर्षीय अनुश्रुति ने कार्यक्रम का थीम गीत "ऐ मेरे वतन के लोगों" गाकर सब की आँखों में पानी भार दिया। बच्चों द्वारा अभिनय संवाद द्वारा आजादी का वास्तविक अर्थ बताया गया जिसका दर्शकों ने खड़े होकर मुक्त हस्त से तालियों की गूँज से समर्थन किया। फणीश पवार जी द्वारा जब जहाँ डाल डाल पर सोने की चिड़िया करती हैं बसेरा गाया गया तब सभी में देश भक्ति भाव हिलोरे मारने लगा। तीन घंटे तक चले इस कार्यक्रम में 35 कलाकारों द्वारा एक से बढ़कर एक 15 प्रस्तुतियां हुई जिसका सभी ने आनन्द उठाया। कार्यक्रम के मुख्यातिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने कार्यक्रम की प्रसंशा करते हुवे भारत की आजादी में आर्य समाज की भूमिका पर प्रकाश डाला व बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि अगर राष्ट्र के लिए कुछ करना चाहते है तो आर्य समाज से जुड़े क्योंकि आर्य समाज धार्मिक संस्था के साथ साथ सामाजिक व राष्ट्रहित के कार्यो को करने वाली संस्था भी है।

अंत में आर्य समाज रोहतास नगर के प्रधान श्री रामपाल पांचाल जी ने सभी आगंतुक महानुभावों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम की व्यवस्था श्री रोहित आर्य व श्री विकास शर्मा जी ने की। कार्यक्रम में सर्वश्री अभिमन्यु चावला, हरिओम बंसल, सुनहरीलाल, रामस्वरूप शास्त्री, सुबोध कुमार, अनिल अग्रवाल, फूलचंद आर्य, जगदीश प्रसाद शर्मा, नरेश सैनी, श्रीमती वीना आर्या, श्रीमती शारदा आर्या, श्रीमती स्वस्ति यति, श्रीमती विजय रानी शर्मा, श्रीमती शशि शर्राफ सहित पूर्वी दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे।

- सन्दीप कुमार उपाध्याय, संयोजक

प्रतिष्ठा में,

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास

'मोपला'

अवश्य पढ़ें।

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

स्वास्थ्य चर्चा

खून की कमी दूर हो

1. हीरा कसीस पिसा 10 ग्राम में से 2 रत्ती शहद में मिलाकर या मलाई में लपेटकर पानी से प्रात:सायं लें।
2. सत गिलोय 3 रत्ती घी में मिलाकर प्रात: सायं निवाये पानी से लें।
3. नीबू का रस 50 ग्राम में हीरा कसीस पिस 1 ग्राम डालकर मिला दें। इसकी 10 बूंद आधा कप पानी के साथ प्रात: सायं लें।
4. खवस अलहरीद धुला हुआ 20 ग्राम, त्रिफला 60 ग्राम कुट-छानकर लोहे की कढ़ाई में फैला कर इसके 4 उंगल ऊपर तक दही डाल दें। एक सप्ताह तक रखें तथा दिनें में 2-3 बार उलट-पुलट करते हरें। सूख जाने पर कूट-छानकर इसमें पीपल, सौंठ, कालीमिर्च 6 ग्राम मिला दें 3 ग्राम दवा प्रात: खाली पेट एक ग्लास छाछ के साथ 15-20 दिन लगातार लें। इससे खून की कमी, जिगर की खराबी, पीलिया ठीक हो जाता है।
5. कसीस भसम व शहद 2-2 रत्ती मिलाकर प्रात:-सायं लें।
6. धात्रयारिष्ट 4 चम्मच पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय लें।
7. पितपापड़ा (शहतरा) अर्क एक तिहाई कप में पानी मिलकाकर दिन में 3 बार पिएं।
8. चन्द्रप्रभावटी 2-2 गोलियां शहद में मिलाकर प्रात-सायं लें।

- साभार : चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित "चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद" पुस्तक से साभार। यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली -110001 के पते पर भेज सकते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह